

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 8, मानवता का संविधान, त्रिकोटॉमी और समस्याएं

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8 है, मानवता का संविधान, त्रिविमीयता और समस्याएँ।

हम निरंतर देखते हुए, मानव जाति की संवैधानिक प्रकृति में अपने अध्ययन को जारी रखते हुए, धर्मशास्त्रीय नृविज्ञान का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

हमने यह कहकर शुरुआत की कि चार दृष्टिकोण थे, वास्तव में तीन अलग-अलग दृष्टिकोण थे। अद्वैतवाद, हम एक हैं, और वह अविभाज्य है, इसलिए एक मध्यवर्ती अवस्था को नकार दिया जाता है। यह आधुनिक दर्शन और विज्ञान का दृष्टिकोण है, और यह गलत है क्योंकि बाइबल एक मध्यवर्ती अवस्था सिखाती है।

द्वैतवाद या मानवशास्त्रीय द्वैतवाद कहता है कि हम दो भाग हैं, एक शरीर और एक अभौतिक भाग, आत्मा या आत्मा। आम तौर पर, बाइबल इसे सर्वनामों के रूप में बोलती है: मैं मसीह के साथ रहना चाहता हूँ, फिलिप्पियों 1, 2 कुरिन्थियों 5। हम शरीर से अनुपस्थित होंगे और इस तरह प्रभु के साथ उपस्थित होंगे। त्रिभुक्तवाद कहता है कि न केवल आत्मा और आत्मा को कभी-कभी शास्त्रों में अलग किया जाता है, जो सच है, बल्कि वे मानव स्वभाव के अलग-अलग भाग और ऑन्टोलॉजिकल घटक भी हैं।

आत्मा को स्नेह, इच्छाओं, भावनाओं और इच्छाशक्ति के केंद्र के रूप में परिभाषित किया गया है और इसे आत्मा से अलग किया जाता है, जिसे माना जाता है कि वह ईश्वर की चेतना और ईश्वर के साथ संचार को जानती है और करने में सक्षम है। चौथा दृष्टिकोण, जो मुझे बेहतर लगता है, जिस पर मैं पहुंचा हूँ, वह सशर्त एकता, मनोदैहिक एकता या समग्र द्वैतवाद है। यह कहता है, हाँ, हम दो भाग हैं।

मध्यवर्ती अवस्था हमें यह विश्वास दिलाती है कि एक पृथक मानव आत्मा या आत्मा या अमूर्त भाग है। फिर भी, बाइबल की पूरी कहानी के परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो शरीर और आत्मा का यह पृथक्करण असामान्य और अस्थायी है क्योंकि हमें पहले स्थान पर समग्र प्राणी के रूप में बनाया गया था। हम अभी उसी तरह जीते हैं और शरीर के पुनरुत्थान के बाद भी उसी तरह जिएंगे।

तो, वास्तव में, तीन दृष्टिकोण, एकत्ववाद, द्वंद्ववाद, त्रिगुणवाद, और फिर यह सशर्त एकता, मनोदैहिक एकता, और समग्र द्वैतवाद द्वंद्ववाद का एक आधुनिक और बेहतर संस्करण है, जो बाइबिल की कहानी से जुड़ा हुआ है और इस बात पर जोर देता है कि मामलों की सामान्य स्थिति शरीर और आत्मा का एक साथ होना है। फिर हमने कुछ अंशों को देखा जो मध्यवर्ती अवस्था की पुष्टि करते हैं। लूका 23:43 में, यीशु ने पश्चाताप करने वाले चोर से कहा, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे।

वह उनके शरीर में नहीं था, वह उनके अभौतिक अंगों में था। फिलिप्पियों 1:23 , पौलुस इस जीवन को छोड़ना चाहता है, शरीर को छोड़ना चाहता है और मसीह के साथ रहना चाहता है, जो वह कहता है कि कहीं बेहतर है। इसलिए, अभी जब हम जीवित हैं, तो शरीर में यीशु को जानना अच्छा है।

मरना और मसीह के साथ रहना बेहतर है क्योंकि सारे पाप खत्म हो गए हैं, और हम यीशु की तत्काल उपस्थिति में हैं। लेकिन सबसे अच्छा अभी आना बाकी है, यह शरीर का पुनरुत्थान है जिसमें परमेश्वर एक बार फिर शरीर और आत्मा को एक साथ रखता है। 2 कुरिन्थियों 5:6, और 8, शरीर से अनुपस्थित होना प्रभु के साथ उपस्थित होना है।

यह सबसे अच्छा है। और जेपी मोरलैंड टैलबोट सेमिनरी में एक दार्शनिक हैं। मैं एक बार ईटीएस वार्ता में गया था, और लड़के, क्या उसने मुझे आशीर्वाद दिया क्योंकि अब ये सभी संदिग्ध चीजें हैं जहां इंजील धर्मशास्त्री रियायतें दे रहे हैं, और यह उनमें से एक है।

वे एकत्ववाद की ओर झुके हुए हैं, और मैं कहता हूँ नहीं, यह बिल्कुल गलत है। एकत्ववादी होना ज्यादा साफ़-सुथरा है, लेकिन बाइबल हमेशा साफ़-सुथरी नहीं होती। कभी-कभी यह अव्यवस्थित होती है।

और मोरलैंड, मुझे उनके द्वारा दिए गए तीन या चार उदाहरण याद नहीं हैं; उनमें से हर एक बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने इतने सालों तक व्याख्या के श्रमसाध्य, धीमे काम को करते हुए सोचा था। और उनमें से एक क्षेत्र यही था। उन्होंने कहा, हम दो भाग हैं।

यह अचूक है। और इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण पाठ 2 कुरिन्थियों 5:6 और 8 है। शरीर से अनुपस्थित होना प्रभु के साथ उपस्थित होना है। प्रभु के साथ क्या मौजूद है? जाहिर है, इसका एक अमूर्त हिस्सा है।

मैंने बताया कि आमतौर पर, मध्यवर्ती अवस्था की बात विश्वासियों द्वारा की जाती है। दो स्थानों पर अविश्वासियों के लिए इसकी बात की गई है, जो एक मध्यवर्ती नरक बन जाता है। लूका 16 में धनी व्यक्ति और लाजर का दृष्टांत एक स्थान है।

और 2 पतरस 2:9 एक और उदाहरण है। लेकिन एरिकसन सही हैं। मध्यवर्ती अवस्था, जिसे बाइबल सिखाती है, इसलिए हमें भी सिखाना चाहिए, अपूर्ण और असामान्य है।

पादरी भी ऐसा करते हैं। वे सही ढंग से सिखाते हैं कि शरीर से दूर रहना प्रभु के साथ मौजूद होना है। और फिर वे इसे बिना समझे अनंत काल तक मानते हैं, शरीर के पुनरुत्थान को नकारते हैं।

और यह व्यवस्थित धर्मशास्त्र में एक गलती है। त्रिकोटोमस प्रमाण ग्रंथ। दो मार्ग हैं जिन पर त्रिकोटोमस आधारित है।

1 थिस्सलुनीकियों 5, 23 और इब्रानियों 4:12. मुझे लगता है कि त्रिकोटॉमी सही नहीं है। इसलिए, मैं इन पाठों को ध्यान से देखना चाहता हूँ।

वैसे, मैं इसे फिर से कहूँगा। कभी-कभी बाइबल आत्मा और आत्मा में अंतर करती है। अहा, यह त्रिकोटॉमी को साबित करता है।

नहीं, ऐसा नहीं है। नहीं, ऐसा नहीं है। ऐसी बहुत सी चीजें हैं।

विवेक, इच्छा, हृदय, मन, आत्मा, भावना। ये कोई इकाई नहीं हैं। ये पहलू हैं।

वे मनुष्य के आंतरिक जीवन को देखने के तरीके हैं या ऐसा ही कुछ। कभी-कभी, बाइबल वास्तव में आत्मा और आत्मा में अंतर करती है। आत्मा मनुष्य को देखती है, शायद ईश्वर के साथ एक ऊर्ध्वाधर आयाम में।

कभी-कभी, आत्मा शरीर में मनुष्यों को देखती है, खास तौर पर सृष्टि और साथी मनुष्यों से संबंधित एक अधिक क्षैतिज पहलू में। लेकिन इसका मतलब अलग-अलग हिस्से, घटक, संस्थाएँ या ऑन्टोलॉजिकल तत्व नहीं हैं। इसका मतलब यह नहीं है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23. संदर्भ पढ़ें। हमेशा आनन्दित रहें। 5:16. बिना रुके प्रार्थना करें। हर परिस्थिति में धन्यवाद दें क्योंकि मसीह यीशु में आपके लिए परमेश्वर की यही इच्छा है। आत्मा को न बुझाएँ। भविष्यवाणियों को तुच्छ न समझें। लेकिन हर चीज़ को परखें। जो अच्छा है उसे थामे रहें। हर तरह की बुराई से दूर रहें। अब, शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे। हमारी प्रभु यीशु मसीह के आने पर तुम्हारी पूरी आत्मा और तुम्हारी पूरी आत्मा, प्राण और शरीर निर्दोष रखे जाएँ। जो तुम्हें बुलाता है, वह विश्वासयोग्य है। वह निश्चित रूप से ऐसा करेगा। भाइयों, हमारे लिए प्रार्थना करो इत्यादि।

पौलुस ने पद 22 में व्यावहारिक उपदेशों की एक सूची पूरी कर ली है। अब वह दो वैकल्पिक वाक्यों का उपयोग करता है।

यह ग्रीक में एक मनोदशा या विधा है जो इच्छा व्यक्त करती है, जिसे इच्छा प्रार्थना कहा जाता है, जो पत्र-शैली की एक उप-शैली है। यानी, इच्छा प्रार्थना एक इच्छा या अच्छे इरादों की अभिव्यक्ति है, जो एक ही समय में ईश्वर की ओर होती है। एफएफ ब्रूस वार्ड बाइबिल कमेंट्री इस स्थान पर इच्छा प्रार्थना के बारे में बात करती है।

पौलुस थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों के लिए एक इच्छा प्रार्थना व्यक्त करने के लिए दो वैकल्पिक शब्दों का उपयोग करता है। पहला सक्रिय, दूसरा निष्क्रिय। पौलुस शब्द क्रम और स्वचालित शब्दों के गहन उपयोग द्वारा इस बात पर जोर देता है कि केवल परमेश्वर ही प्रार्थनाओं का उत्तर दे सकता है और थिस्सलुनीकियों को पवित्र कर सकता है।

शांति का परमेश्वर स्वयं आपको पवित्र करे और इसी तरह। 5:23 और 24 की इच्छा प्रार्थना का अध्ययन 3:11 से 13 में पहले वाले के साथ लाभप्रद रूप से किया जा सकता है। अब हमारा

परमेश्वर और पिता स्वयं, 1 थिस्सलुनीकियों 3.11, और हमारा प्रभु यीशु हमें आपके पास आने का मार्ग दिखाये।

और प्रभु तुम्हें एक दूसरे के लिए और सभी के लिए प्रेम में बढ़ाए और बढ़ाए जैसा कि हम तुम्हारे लिए करते हैं, ताकि वह हमारे प्रभु यीशु के अपने सभी संतों के साथ आने पर हमारे परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे हृदयों को पवित्रता में निर्दोष स्थापित करे। दोनों इच्छा प्रार्थनाएँ, नंबर एक, ऑटो के गहन उपयोग से शुरू होती हैं, जिसका अनुवाद इस प्रकार होता है कि ईश्वर स्वयं हो या ईश्वर और पिता हो, ईश्वर और पिता, वह, हमारा ईश्वर और पिता स्वयं। यह तीव्र होता जाता है।

दूसरा, वे इसके बाद ईश्वर का संदर्भ देते हैं। पहले के अंश में इस बिंदु पर मसीह को शामिल किया गया है, जो ईश्वर के साथ उनकी समानता को दर्शाता है। तीसरा,

इच्छा प्रार्थना को व्यक्त करने के लिए एओरिस्ट ऑप्टिक्स का उपयोग करें।

चौथा, पवित्रता का उल्लेख करें। और पांचवां, एक युगांतकारी नोट पर समाप्त करें। इन दो इच्छा प्रार्थनाओं में कुछ महान समानताएं हैं, कुछ समानताएं हैं।

पौलुस ने पहले इस पत्र में पवित्रीकरण के बारे में महत्वपूर्ण बातें कही थीं। 3:13, 4:3 से 6. अब 5:23 में, वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर इस पवित्रीकरण को लाए। वह परमेश्वर से थिस्सलुनीकियों को एकाग्र करने, थिस्सलुनीकियों को पूरी तरह, पूरी तरह या पूरी तरह से पवित्र करने के लिए कहता है।

शांति का परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे, और तुम्हारी पूरी आत्मा, प्राण और शरीर मसीह के आने पर निर्दोष रखे जाएँ। यह पवित्रीकरण पौलुस के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि वह इसे दूसरे स्वतंत्र खंड में दोहराता है। वह प्रार्थना करता है कि थिस्सलुनीकियों को प्रभु यीशु के दोबारा आने तक निर्दोष रखा जाए।

वह अपने पाठकों के पूर्ण रूप से, संपूर्ण रूप से, पवित्र या ESV, पूर्ण रूप से पवित्र होने की अवधारणा पर विस्तार करता है। वह प्रार्थना करता है कि प्रभु यीशु के आगमन पर उनकी पूरी आत्मा, प्राण और शरीर निर्दोष रूप से सुरक्षित रहें। आपकी पूरी आत्मा, प्राण और शरीर 5:23 से पूरी तरह से आपका विस्तार है। वे दोनों उस आयत के पहले भाग से 5:23 में हैं।

पॉल ने प्रार्थना की कि जब मसीह फिर से आएगा, तब परमेश्वर थिस्सलुनीकियों को उनके अस्तित्व की संपूर्णता में सुरक्षित रखे। उनका जोर उनके व्यक्तित्व की एकता पर है। इसे एकवचन क्रिया, इसे रखा जा सकता है, और साथ ही एकवचन विशेषण, होलाक्लेरोन द्वारा संप्रेषित किया जाता है।

अर्थात्, आपकी पूरी आत्मा, प्राण और शरीर सुरक्षित रहें। यह सुरक्षित रहना एकवचन है। निर्दोष बने रहें।

यह एकवचन है। इसलिए, तीन पहलुओं, आत्मा, प्राण और शरीर को एकता के रूप में देखा जाता है। हम इसे क्रिया और विशेषण के एकवचन होने के कारण जानते हैं।

क्रिया तीन तत्वों की बात करती है और विशेषण इसका वर्णन करता है। लेकिन तीनों मिलकर 3:13 में आपके दिलों की भावना को बहुत कम जोड़ते हैं। क्या दिल मानव संविधान का एक और हिस्सा है? नहीं, वे नहीं हैं, और उन्हें कभी भी ऐसा होने का इरादा नहीं था। बेशक, हमारे शरीर में दिल है, लेकिन हम इसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

वह पंप जो आपके रक्त को पंप करता है। यह आपके अंदरूनी हिस्सों के बारे में बात करता है। मानव प्रकृति के शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच अंतर आसानी से किया जा सकता है, लेकिन आत्मा और आत्मा के बीच तुलनात्मक अंतर करना, एक ऑन्टोलॉजिकल, मजबूरी है।

ध्यान दें कि ब्रूस ने आपके दिल की तुलना 3:11 से 3:13 की इच्छा प्रार्थना से की है, जिसमें शरीर, आत्मा और आत्मा के साथ प्रार्थना की गई है। 5:23 में। यह एक उद्धरण है। यह पूरी बात एफएफ ब्रूस की टिप्पणियाँ हैं।

इसे बनाना जोखिम भरा है। मुझे खेद है, मैं पीछे हट गया। मैं थोड़ी देर में इस पर जोर दूंगा।

पौलुस प्रार्थना करता है कि परमेश्वर थिस्सलुनीकियों को मसीह के वापस आने तक उनके संपूर्ण अस्तित्व में सुरक्षित रखे। उसका जोर एकवचन क्रिया और एकवचन विशेषण के कारण उनके व्यक्तित्व की एकता पर है। जोर उनके व्यक्तिगत भागों के बजाय उनके संपूर्ण अस्तित्व पर है।

फिर भी, उनके पूरे अस्तित्व के बारे में विभिन्न पहलुओं को सूचीबद्ध करके बात की जाती है, खास तौर पर अंगों को नहीं, बल्कि मानव प्रकृति के पहलुओं को। मनुष्य शरीर, आत्मा और आत्मा है। शरीर मनुष्य के भौतिक भाग को संदर्भित करता है।

आत्मा और प्राण उसके अभौतिक भाग के लिए। इस प्रकार मैं 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 में आत्मा और प्राण के बीच कुछ अंतर को स्वीकार करता हूँ। फिर भी मुझे नहीं लगता कि मानव स्वभाव के दो अलग-अलग घटक यहाँ मनुष्य के संपूर्ण अस्तित्व के समान अभिव्यक्तियों से अधिक निहित हैं। व्यवस्थाविवरण 6:5 में। अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा और शक्ति से प्रेम करो। या मत्ती 22:37। आपको अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा, मन और शक्ति से प्रेम करना चाहिए।

क्या वे चार अंग शरीर से अलग हैं? नहीं। नहीं, वे सिर्फ बयानबाज़ी के लिए हैं जिसका मतलब है कि अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पास मौजूद हर चीज़ से प्यार करो। लूका 10:27 के लिए भी यही है। FF ब्रूस 1. थिस्सलुनीकियों 5.23 पर टिप्पणी करते हैं। उद्धरण, तीन संज्ञाओं न्यूमा, प्सूचे और सोमा, आत्मा, प्राण और शरीर के संयोजन पर मानव प्रकृति के त्रिपक्षीय, तीन-भागीय सिद्धांत का निर्माण करना जोखिम भरा है।

तीनों मिलकर पवित्रता की पूर्णता पर और जोर देते हैं जिसके लिए लेखक प्रार्थना करते हैं। बिल्कुल सही। लेकिन तीनों मिलकर 3:13 में आपके दिलों की भावना को थोड़ा-बहुत जोड़ते हैं।

मानव प्रकृति के शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच अंतर आसानी से किया जा सकता है, लेकिन आत्मा और प्राण के बीच तुलनात्मक अंतर करना मजबूरी है। एफएफ ब्रूस। थेसालोनिकी पत्रों पर टिप्पणी।

ब्रूस द्वारा 3:11-13 की इच्छा प्रार्थना से आपके दिलों की तुलना 5:23 में शरीर, आत्मा और आत्मा से करने पर ध्यान दें। मेरा सवाल है, मानव स्वभाव के त्रिकोटोमिस्ट दृष्टिकोण में दिल कहाँ फिट होगा? उत्तर: नहीं, यह मानव स्वभाव का हिस्सा नहीं है। नहीं, यह मानव स्वभाव का हिस्सा नहीं है, जैसे आत्मा और आत्मा भाग नहीं हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि मैं कहूँगा कि इस अंश का त्रिकोटोमिस्ट वाचन बयानबाजी को समझने, भाषा को समझने और उन चीज़ों से इकाई बनाने में विफलता दिखाता है जिन्हें लेखक द्वारा इकाई बनाने का इरादा नहीं है, जो इस मामले में पॉल है।

अन्य त्रिकोटोमिस्ट प्रमाण पाठ, जिसके बिना त्रिकोटोमी नहीं होगी, इब्रानियों 4:12 है। हम त्रिकोटोमी की अन्य समस्याओं को देखने जा रहे हैं। मैंने पहले जो परिभाषाएँ पढ़ी हैं, वे सही नहीं हैं। यही इसकी समस्या है।

आपको कुछ ऐसे अंश मिल सकते हैं, जिनमें आप उन परिभाषाओं को पढ़ सकते हैं, लेकिन कुल मिलाकर, मैं आपको दिखाऊँगा कि यह काम नहीं करता। इब्रानियों 4, वह सृष्टि के बाद परमेश्वर के विश्राम के बारे में बात कर रहा है, जिसका वादा यहोशू ने किया था और इस्राएल उसे प्राप्त करने में विफल रहा। इब्रानियों 4:11, इसलिए आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयास करें।

अब, यह प्रभु और यीशु को जानने से विश्राम है, जिन्होंने कहा, हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। लेकिन इससे भी बढ़कर, यह परमेश्वर के लोगों का अंतिम शाश्वत विश्राम है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 14 में है, जहाँ विश्वासी प्रभु में मरते हैं और अपने परिश्रम से विश्राम करते हैं। इसलिए आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयास करें, इब्रानियों 4:11, ताकि कोई भी उसी तरह की अवज्ञा करके न गिरे जैसा कि पूर्वजों ने जंगल में दिखाया था।

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल है, और हर एक दोधारी तलवार से भी अधिक चोखा है, और प्राण और आत्मा को, गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग करके छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। और कोई भी प्राणी उसकी दृष्टि से छिपा नहीं है, बल्कि सब कुछ उसकी आंखों के सामने नंगे और बेपर्दा हैं, जिसे हमें लेखा देना है। इब्रानियों के पत्रों के लेखक अपने पाठकों को अवज्ञा के खतरे के बारे में चेतावनी दे रहे हैं।

पद 12 में, संयोजक गर, या के लिए द्वारा पिछले पदों से संबंधित, वह परमेश्वर के वचन के बारे में बात करता है जो किसी व्यक्ति के अस्तित्व की गहराई तक प्रवेश करने में सक्षम है ताकि भीतर की अवज्ञा को प्रकट किया जा सके। वह इस गतिशील हृदय-खोज कार्य के संदर्भ में शब्द का वर्णन करने के लिए पाँच विधेय विशेषणों का उपयोग करता है, जिनमें से दो कृदंत हैं। वह शुरू करता है, क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है।

यहाँ परमेश्वर के वचन को गतिशील और शक्तिशाली बताया गया है। यह उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है जिसके लिए परमेश्वर ने इसे कहा है। यशायाह 55:11 से तुलना करें, मेरा वचन व्यर्थ होकर मेरे पास नहीं लौटता, इत्यादि।

परमेश्वर के वचन को किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक धारदार बताया गया है, क्योंकि यह मनुष्य को बाहर और भीतर दोनों तरफ से छेदता है। वचन मानव हृदय में प्रवेश करने और वहाँ छिपी किसी भी अवज्ञा को प्रकट करने में सक्षम है। साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ में इस श्लोक का यही मतलब है।

यह आत्मा और आत्मा के विभाजन को भेदता है, और यह जोड़ों और मज्जा के पृथक्करण को भेदता है। क्या हमें संज्ञाओं के इन दो जोड़ों को मनुष्य के गैर-भौतिक भागों, आत्मा और आत्मा, और भौतिक भागों, जोड़ों और मज्जा के घटकों को निर्दिष्ट करने के रूप में समझना चाहिए? कोई हाँ कह सकता है और इस तथ्य को सबूत के रूप में सामने ला सकता है कि जोड़ और मज्जा वास्तव में हमारे शारीरिक मेकअप में विशिष्ट इकाइयाँ हैं। हालाँकि, तुरंत ही कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

हमारे मनुष्य के शारीरिक अस्तित्व के कई अन्य अंग हैं, त्वचा, हड्डियाँ, रक्त, मांसपेशियाँ, नसें, आदि। जोड़ और मज्जा मनुष्य की भौतिक संरचना का संपूर्ण वर्णन नहीं करते। इसके अलावा, हमारा पाठ आगे बताता है कि परमेश्वर का वचन हृदय के विचारों और विचार-विमर्श का न्याय करने में सक्षम है।

फिर से हृदय की ओर लौटते हैं। हृदय और हृदय का आत्मा और आत्मा से क्या संबंध है? क्या मनुष्य तीन अभौतिक संस्थाओं से बना है: शरीर, आत्मा, आत्मा और हृदय? आत्मा और आत्मा के विभाजन को, उद्धरण, शब्दों के अलंकारिक संचय, उद्धरण के करीब, मनुष्य के संपूर्ण अस्तित्व को व्यक्त करने के रूप में मानना अधिक सुरक्षित है। ब्रूस, इब्रानियों में टिप्पणी, नए नियम पर नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी।

मुद्दा यह है कि, उद्धरण, आत्मा और आत्मा के बीच या जोड़ों और मज्जा के बीच से अधिक घनिष्ठ कोई अलगाव नहीं हो सकता है, उद्धरण बंद करें। फिलिप ह्यूजेस, इब्रानियों के लिए पत्र पर टिप्पणी। परमेश्वर का मर्मज्ञ वचन हमारे अंतरतम विचारों का न्याय करने में सक्षम है।

यह हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व के सबसे गहरे कोनों की जांच करता है और अवचेतन उद्देश्यों को प्रकाश में लाता है। ब्रूस, विचारों और विचार-विमर्श को मनुष्य के मानसिक जीवन के सूक्ष्म अंतर के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। वे वस्तुतः समानार्थी हैं और परमेश्वर के वचन के खोजी गुणों का वर्णन करते हैं।

अगली आयत बताती है कि कैसे सारी सृष्टि परमेश्वर की नज़रों में खुली और नंगी है। उससे कुछ भी छिपा नहीं है। संदर्भ में, एक लेखक अपने पाठकों से आज्ञाकारिता का आग्रह कर रहा है, मानव हृदय के बारे में परमेश्वर के अंतरंग ज्ञान का वर्णन करके।

ट्रिकोटॉमी के लिए मार्ग समस्याग्रस्त हैं। परिभाषा याद रखें, और ट्रिकोटॉमी की वकालत करने वाला एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र खोजना बहुत कठिन है। मुझे पता है कि यह लोगों के बीच एक आम दृष्टिकोण है।

मैंने कुछ पादरियों को ऐसा करते हुए भी सुना है, और वे बस उन आयतों को पढ़ते हैं। इब्रानियों 4:12, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, और बस उनका निष्कर्ष मान लेते हैं। लेकिन यहाँ स्कोफील्ड संदर्भ बाइबल, न्यू स्कोफील्ड है, जो निश्चित रूप से एक उपकरण के रूप में कुछ हद तक मददगार है।

आत्मा स्नेह, इच्छाओं, भावनाओं और इच्छा का केंद्र है। आत्मा स्नेह, इच्छाओं, भावनाओं और इच्छा का स्रोत है। आत्मा ईश्वर-चेतना और ईश्वर के साथ संचार का केंद्र है।

ठीक है, मैं समझ गया। ट्रिकोटॉमी के लिए अंश समस्याग्रस्त हैं। ल्यूक 1:46-47 में, अपने मैग्निफिकैट में, मेरी प्रार्थना करती है, उद्धरण, मेरी आत्मा प्रभु की महिमा करती है और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित होती है, उद्धरण समाप्त करें।

यहाँ आत्मा और आत्मा को ईश्वर चेतना और ईश्वर के साथ संचार करने में सक्षम होने के लिए समानार्थी रूप से इस्तेमाल किया गया है। मुझे लगा कि केवल आत्मा ही ऐसा करती है, आत्मा नहीं। वैसे, मैं दिखा रहा हूँ कि मैं जो कर रहा हूँ वह समस्याग्रस्त है।

लेकिन मैं हर एक अंश के लिए ऐसा नहीं कर सकता, इसलिए कोई अभी भी कह सकता है, अहा , आपने उसमें से 90% को हटा दिया, लेकिन यहाँ पर, मैं इसे पढ़ सकता हूँ। हमारा लक्ष्य बाइबल को पढ़ना नहीं है। यह बाइबल से उसका अर्थ पढ़ना है।

इस मामले में, यह इन शब्दों का अर्थ है। इसी तरह, यूहन्ना 12:27 में, यीशु को आत्मा, ESV, या हृदय, NIV में परेशान कहा गया है। और 13:21 में, उद्धारकर्ता आत्मा में परेशान है।

ये प्रयोग मुझे बहुत हद तक जोहानिन भिन्नता की तरह लगते हैं। चौथे सुसमाचार, अध्याय पाँच, भिन्नता में लियोन मॉरिस के अध्ययन की तुलना करें, जोहानिन शैली की एक विशेषता है। इन अंशों में आत्मा और आत्मा दोनों का उपयोग स्नेह, इच्छाओं और भावनाओं के बीज को दर्शाने के लिए किया जाता है।

एक मिनट रुकिए, मैंने सोचा कि यह आत्मा का विधान है न कि आत्मा का। आपका मतलब है कि बाइबल के लेखक इन परिभाषाओं का पालन नहीं कर रहे हैं? नहीं। दुःख की तुलना करें, जिसका उल्लेख आत्मा से किया गया है, 1 शमूएल 1:10, हन्ना।

2 पतरस 2:8, लूत। और दुःख की तुलना आत्मा से करें, यशायाह 54:6, प्रेरितों के काम 17:16, पौलुस। यह दावा करना ठीक नहीं होगा कि आत्मा मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 5:5 में है, लेकिन आत्मा नहीं।

1 पतरस 1:9 और याकूब 1:21 विश्वासियों की आत्माओं के उद्धार की बात करते हैं। प्रकाशितवाक्य 6:9 की तुलना करें, वेदी के नीचे की आत्माएँ परमेश्वर से रोती हैं, प्रतिशोध की माँग करती हैं। और इब्रानियों 12:23, धर्मी लोगों की आत्माएँ सिद्ध की गई हैं।

आत्माएँ, मध्यवर्ती के लिए, मनुष्य का गैर-भौतिक भाग जो मृत्यु के बाद जीवित रहता है, इब्रानियों 12:23 में। आत्माएँ, प्रकाशितवाक्य 6:9, मनुष्य के उसी भाग के लिए जो मृत्यु के बाद जीवित रहता है। क्या वे वास्तव में दो अलग-अलग भाग हैं? मनुष्य को व्यापक रूप से शरीर और आत्मा या शरीर और आत्मा के रूप में नामित किया गया है। पहला पदनाम मैथ्यू 10:28 में पाया जाता है। यीशु ने कहा, उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं लेकिन आत्मा को नहीं मार सकते।

बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। क्या यीशु कुछ भागों को छोड़ रहा है? आत्मा? नहीं। वह सभी मनुष्यों के बारे में बात कर रहा है।

ध्यान दें कि यहाँ आत्मा न्याय से गुजरती है। 2 कुरिन्थियों 7:1 में, आत्मा और शरीर व्यापक रूप से मानव स्वभाव को दर्शाते हैं। " हम अपने आप को शरीर और आत्मा को दूषित करने वाली हर चीज़ से शुद्ध करें। परमेश्वर के प्रति श्रद्धा से पवित्रता को सिद्ध करें।"

क्या आत्मा नामक कोई दूसरा क्षेत्र है? आत्मा नामक कोई दूसरा पहलू, घटक? नहीं, ऐसा नहीं है। वह आत्मा और शरीर कह सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

और इसका मतलब आत्मा और शरीर के समान ही होगा। वह हृदय और शरीर भी कह सकता था। 1 कुरिन्थियों 7:24 में भी, उद्धरण, एक अविवाहित महिला या कुंवारी प्रभु के मामलों के बारे में चिंतित है।

उसका उद्देश्य शरीर और आत्मा से भगवान को समर्पित होना है। क्या उसका कोई हिस्सा छूट गया है? ओह, एक पल रुको। मैंने सोचा था कि आत्मा ही वह हिस्सा है जो समर्पित है, यह काम नहीं करता।

याकूब 2:25 सिखाता है कि आत्मा के बिना शरीर मृत है। मरने को आत्मा के प्रस्थान के रूप में वर्णित किया गया है। उत्पत्ति 35:18, 1 राजा 17:21, मत्ती 10:28। इसे आत्मा के प्रस्थान के रूप में भी वर्णित किया गया है, आपने अनुमान लगाया होगा।

भजन 31:5, मत्ती 27:50, लूका 9:55. 50 मज़ा, ओह, यह मज़ा है। लूका 9:55, प्रेरितों 7:59. एक बार फिर, मरने को आत्मा के प्रस्थान के रूप में विभिन्न रूप से वर्णित किया गया है। लूका 35:18, अरे, माफ़ करना।

उत्पत्ति 35:18, 1 राजा 17:21, मत्ती 10:28. और कई बार शास्त्र मृत्यु को आत्मा के चले जाने के रूप में वर्णित करता है. भजन 31:5, मत्ती 27:50, लूका 9:55. और प्रेरितों के काम 7:59. मृतकों को कभी-कभी आत्मा के रूप में संदर्भित किया जाता है. प्रकाशितवाक्य 6:9 और कभी-कभी आत्माओं के रूप में, इब्रानियों 12.23. मानव जाति की संवैधानिक प्रकृति पर निष्कर्ष.

द्वंद्व के साथ, मैं अनिच्छा से मनुष्य के भौतिक और अभौतिक भागों के अस्तित्व को स्वीकार करता हूँ। यह गड़बड़ है, लेकिन ऐसा ही है। हमारे पास अपना सिद्धांत नहीं है और हम बाइबल को इसके अनुरूप बनाते हैं।

हालाँकि, मैं सबसे महत्वपूर्ण बात हमारी एकता पर जोर देना चाहूँगा। शरीर और आत्मा का मिलन सामान्य है। धर्मग्रंथ एक मध्यवर्ती अवस्था के अस्तित्व की शिक्षा देते हैं जिसमें मनुष्य का अमूर्त हिस्सा एक अमूर्त अस्तित्व में रहता है।

यह उस शत्रु मृत्यु के कारण है कि हम इसके बारे में जानते हैं। और मृत्यु ही अंतिम शत्रु है जिसका नाश किया जाना है, 1 कुरिन्थियों 15 हमें बताता है। हालाँकि, यह अवस्था, मध्यवर्ती अवस्था, अस्थायी और अपूर्ण है।

हमारी अंतिम अवस्था एक नए स्वर्ग के नीचे एक नई धरती पर महिमामय शरीरों के साथ एकीकृत व्यक्तियों के रूप में अनन्त जीवन होगी। जॉन कूपर ने *बॉडी, सोल एंड लाइफ एवरलास्टिंग* में मनुष्य को एक समग्र द्वैतवाद के रूप में वर्णित किया है। इसलिए मैं अपने नायकों में से एक होकेमा की द्वैतवाद को अस्वीकार करने के लिए आलोचना करता हूँ।

वह सोचता है कि वह इसे अस्वीकार कर सकता है और फिर भी मनोदैहिक एकता में विश्वास कर सकता है। वह वास्तव में ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि वह एक मध्यवर्ती अवस्था की पुष्टि करता है। वास्तव में एक धार्मिक असंगति है।

वह एक महान व्यक्ति हैं। मैंने अपने पूरे शिक्षण करियर में उनकी पुस्तकों का उपयोग ठोस, बाइबिल आधारित, सुधारवादी, सुसमाचारी, निष्पक्ष, दूसरों को एक अच्छी ईसाई भावना के साथ निवेदन करने वाली और घंटी की तरह स्पष्ट रूप से किया।

हम इस व्याख्यान का समापन आत्मा की उत्पत्ति पर एक संक्षिप्त चर्चा के साथ करते हैं। और मैं सीधे अंत तक पहुँच जाऊँगा। हम नहीं जानते।

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि मनुष्य में आत्मा की उत्पत्ति कहाँ से होती है। फिर भी, इस मुद्दे पर दो ईसाई दृष्टिकोण हैं, और इसीलिए मैं इस बारे में बात कर रहा हूँ, वे हैं परंपरावाद और सृष्टिवाद। परंपरावाद, परंपरावाद।

परंपरावाद और सृजनवाद। चार्ल्स हॉज परंपरावादियों को उन लोगों के रूप में परिभाषित करते हैं, जो इस बात से इनकार करते हैं कि आत्मा बनाई गई है। वे पुष्टि करते हैं कि यह पीढ़ी के नियम द्वारा निर्मित है, जो वास्तव में शरीर की तरह किसी के माता-पिता से प्राप्त होती है।

हॉज का *सिस्टमैटिक थियोलॉजी*, खंड 2, पृष्ठ 68. मैं खुद की तारीख बताऊँगा। मध्य युग के आखिर में जब मैं सेमिनरी में गया था, तो हमने चार्ल्स हॉज के तीन खंड पढ़े थे।

उस समय पुरुष पुरुष थे, और हम अपने घोड़े पर सवार होकर ऊपर की ओर चढ़ते थे। बस इतना ही काफी है। हॉज ने सृष्टिवाद को इस दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है कि,

उद्धरण, बच्चे की आत्मा माता-पिता से उत्पन्न या प्राप्त नहीं होती है, बल्कि ईश्वर की एक तात्कालिक एजेंसी द्वारा बनाई जाती है।

हॉज, खंड 2, पृष्ठ 70. इन स्थितियों पर अपनी चर्चा के दौरान हॉज के निष्कर्ष उद्धृत करने योग्य हैं। दूसरे शब्दों में, मैं चार्ल्स हॉज को उद्धृत करते हुए डरपोक हो रहा हूँ।

सिस्टमैटिक थियोलॉजी, खंड 2, पृष्ठ 75 और 76. ऐसा नहीं लगता कि बाइबल इस बारे में कुछ बताएगी। हाँ, हमारे पास आत्माएँ हैं, लेकिन हम उन्हें अपने माता-पिता से प्राप्त करते हैं या भगवान गर्भधारण के समय हमें देते हैं, मैं नहीं कह सकता।

हॉज ने लिखा, इस चर्चा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना नहीं है कि पवित्रशास्त्र में क्या स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किया गया है, न ही यह स्पष्ट करना है कि सभी पक्षों द्वारा क्या गूढ़ माना जाता है। ओह, मुझे यह पसंद है, लेकिन उन सिद्धांतों को अपनाएने से बचना है जो परमेश्वर के वचन के स्पष्ट और महत्वपूर्ण सिद्धांतों के विरोध में हैं। इस पर आमीन।

यदि परम्परावाद यह सिखाता है कि आत्मा में विच्छेदन या विभाजन की संभावना है, या कि मानव जाति संख्यात्मक रूप से एक ही पदार्थ से बनी है, या कि ईश्वर के पुत्र ने अपने साथ व्यक्तिगत मिलन में उसी संख्यात्मक पदार्थ को ग्रहण किया जिसने पाप किया और आदम में गिर गया, तो इसे झूठा और खतरनाक दोनों ही रूप में खारिज किया जाना चाहिए। वह जो कर रहा है वह पुष्टि करना नहीं है, बल्कि वह त्रुटियों को अस्वीकार करके चीजों की रक्षा कर रहा है। मैं सहमत हूँ।

मैं इनमें से कुछ गलतियों के बारे में सोच भी नहीं सकता। निस्संदेह वे चर्च के इतिहास में दिखाई दी हैं। लेकिन अगर सब कुछ समझाने का दिखावा किए बिना, आमीन, यह केवल दावा करता है, यह परंपरावाद है, लेकिन अगर सब कुछ समझाने का दिखावा किए बिना, परंपरावाद केवल यह दावा करता है कि मानव जाति सामान्य नियमों के अनुसार प्रचारित होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि समान समान को जन्म देता है, कि बच्चा अपने माता-पिता से भौतिक नियमों के संचालन के माध्यम से अपनी प्रकृति प्राप्त करता है, जो ईश्वर की एजेंसी द्वारा संचालित और नियंत्रित होता है, चाहे वह निर्देशक हो या रचनात्मक, जैसा कि जीवित प्राणियों के प्रचार के अन्य सभी मामलों में होता है, इसे एक खुला प्रश्न या उदासीनता का विषय माना जा सकता है।

मैं सहमत हूँ। सृष्टिवाद यह नहीं मानता कि मानव आत्मा के निर्माण में ईश्वर की तत्काल शक्ति का कोई अन्य प्रयोग है, जैसा कि अन्य मामलों में जीवन के निर्माण में होता है। यह केवल इस बात से इनकार करता है कि आत्मा विभाजन करने में सक्षम है, कि सभी मानव जाति संख्यात्मक रूप से एक ही सार से बनी है, और कि मसीह ने संख्यात्मक रूप से उसी सार को ग्रहण किया जिसने आदम में पाप किया।

सृष्टिवाद के साथ समस्या यह है कि क्या ईश्वर पापी आत्मा बनाता है, या ईश्वर शुद्ध आत्मा बनाता है, और जब वह मानव भ्रूण में प्रवेश करती है, तो वह पापी हो जाती है? यह एक गड़बड़ है। इसलिए, मैं हॉज से सहमत हूँ। बाइबल न तो परंपरावाद सिखाती है, न ही सृष्टिवाद, हमें अपनी

आत्माएँ अपने माता-पिता से मिलती हैं, ईश्वर विशेष रूप से गर्भ में प्रत्येक बच्चे के लिए उन्हें बनाता है, मुझे लगता है कि गर्भाधान के समय।

लेकिन हमें निश्चित रूप से गलतियों को अस्वीकार करना चाहिए, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि बाइबल ऐसा नहीं कहती है, इसलिए हमें कोई रुख अपनाने की ज़रूरत नहीं है। आपके अच्छे ध्यान के लिए धन्यवाद। भगवान की इच्छा से, हमारे अगले व्याख्यान में, हम अपने पाठ्यक्रम के दूसरे मुख्य भाग को लेंगे, जो पाप का सिद्धांत है। धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन और मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8 है, मानवता का संविधान, त्रिकोटॉमी और समस्याएँ।